प्रथम अध्याय
मिथक – अवधारणा, स्वरूप एवं महत्व

प्राचीन एवं पौराणिक कथाएँ जो सदियों से चली आ रही है, और उनमें निहित विश्वास एवं रूढ़ को 'मिथक' कहा जाता है । पश्चिम में मुख्य रूप से अमेरिका में मिथक आलोचना का प्रचार हो रहा है जिसे एक वैज्ञानिक पद्धति माना जाता है । साहित्य में ही नहीं बल्कि मानव विज्ञान एवं समाज विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी मिथक का महत्वपूर्ण काम हो रहे हैं ।

इतिहासकार, दार्शनिक, कलाकार, मनोविश्लेषक इन सभी ने मिथक पर अपने-अपने दृष्टिकोण को सामने रखा है । इन सारी दृष्टिकोण को पढ़ने और समझने के बाद हम इस परिणाम पर पहुँच सकते हैं कि मिथक केवल कल्पना नहीं है, उसका अपने समय में एक सामाजिक यथार्थ एवं महत्व रहा है । रामविलास शर्मा का कथन है कि कल्पना के बावजूद कवियों ने प्रत्यक्ष रूप से अपने समकालीन मानव जीवन का चित्रण किया है । देवताओं अथवा अवतारी पुरुषों के रूप में बहुत कुछ अनजाने में अपने समाज का चित्र प्रस्तुत कर दिया है । मिथक के निर्माण में लोक विश्वासों ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है । महाभारत और रामायण, भारत के सबसे प्राचीन पौराणिक ग्रंथ जिसका पुनःसृजन भारत की कई भाषाओं में हो चुकी हैं, इन सभी नए संस्करणों में अर्जुन, भीम, कृष्ण, राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान जैसे पात्र एक ही है किंतु इनकी कथा अलग-अलग भाषा और अलग-अलग ढंग में हम देखने को मिलती है । इसलिए इनकी प्रामाणिकता को लेकर आज भी चर्चें एवं बहस सदैव होते रहते हैं ।

भारतीय संस्कृति में श्रुतियों को बहुत महत्व दिया जाता है । हर छोटी सी छोटी अनुश्रित कहानियों का एक नया एवं भिन्न रूप आए दिन हमारे सामने आते रहते हैं । "मिथक में व्यक्त सत्य भले ही क्रमहीन हो, बिखरे हुए हो, अपूर्ण हो किंतु मूल्यवान अवश्य होते हैं।"[1] साहित्य पुराने मिथकों में नया अर्थ लाकर अपने समय और समाज का सच कहने का प्रयत्न

[1] मिथक किसे कहते हैं-अर्थ, परिभाषा अदाहरण सहित जानिए - हिंदी की बिंदी - https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s

करता है । इसके दौरान वे मिथकों में बहुत कुछ जोड़ते हैं और कुछ घटाते हैं ।

आधुनिक साहित्य में किसी भी नयी बात को कहने के लिए लेखकों ने अधिकतर समय मिथकीय घटनाओं के प्रयोग किया है जो उस बात को प्रभावी ढंग से कहने में सहयोग मददगार देती है । इन कृतियों में पौराणिक मिथकीय तत्वों से काफी लाभ उठाया है । भक्ति काल के लगभग सभी लेखकों के काव्य में हमें मिथक का अंश देखने को मिलता है । निर्गुण भक्ति धारा के होते हुए भी कबीर के दोहों में हम पौराणिक पात्रों का उल्लेख देख सकते हैं । इस प्रकार आधुनिक काल तक आते–आते भारतेंदु युग, द्विवेदी युग के समय में भी साहित्य में मिथक का उपयोग कम नहीं है ।

1.1. मिथक – अर्थ, परिभाषा एवं विकास

अंग्रेजी भाषा का शब्द 'मिथ' का हिंदी रूप मिथक शब्द का पहली बार आधुनिक काल में हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी ने प्रयोग किया था। भारत में मिथक का जन्म ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हुआ था। भूतकाल की घटनाओं या तथ्यों को जब वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया जाता है तो उसे मिथकीय विश्लेषण कहा जाता है । 'मिथ' शब्द जो यूनान भाषा के 'माइथॉस' शब्द से बना था, उसका शाब्दिक अर्थ 'मौखिक कथा' है । भारतीय पृष्ठभूमि में मिथक पुरातन युग से जुड़ी अनेक विश्वासों की अभिव्यक्ति को माना जाता है । "मिथक या मिथक शब्द का अर्थ है – परंपरागत पौराणिक या लोग विश्वास मूलक संदर्भ। मिथक ऐसे संदर्भ रहे जिनके पीछे पूर्व धारणा विश्वास की शक्ति निहित होती है" - निर्मला जैन पाश्चात्य काव्य चिंतन

1.1.1. अर्थ एवं परिभाषा

मिथक पर हमें कई विचार एवं परिभाषाएँ देखने को मिलती है । मिथक संबंधित भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने अपना मत प्रकट किया है जिनमें कुछ मत एवं परिभाषाएँ इस प्रकार है –

- "मिथ आदिम संस्कृति का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण उपादान है, यह विश्वास को अभिव्यक्त विकसित और संहिताबद्ध करता है। यह नैतिकता की सुरक्षा करता है, उसे दृढ करता है, यह शास्त्र विधि धार्मिक अनुष्ठान की क्षमता को प्रमाणित करते हुए मनुष्य के निर्देशन के लिए व्यवहारिक

नियमों का निर्धारण करता है । इस प्रकार मिथक मानव सभ्यता के लिए अत्यावश्यक उपादान है । यह केवल निरर्थक कथा ही नहीं या एक ठोस क्रिया व्यापार का कलात्मक बिंब विधान की प्रस्तुति ही नहीं करता बल्कि आत्मविश्वास और नैतिक विवेक का व्यवहारिक दस्तावेज़ है ।" – एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका

- "मिथक हमारे समाज की एक महत्वपूर्ण क्रिया है जो कि हमारी परंपराओं के स्रोत को यथार्थ की करना क्रमांक क्या मैं तलाशता है, तथा हमारी परंपराओं का समर्थन करता है ।" – मेलिनेवस्की
- "भाषा की उत्पत्ति सांकेतिक अभिव्यक्ति से हुई मिथक भाषा विकास की मंजिल है ।" – विको
- "भाषा का अविर्भाव मिथक से हुआ है ।" – हार्डर
- "मिथक की उत्पत्ति भाषा से हुई एवं यह भाषा के रोग के समान है ।" – मैक्स मूलर
- "मिथक सामूहिक आद्य बिंब होते हैं अतः इस आधार पर इसे डिपस्ट्रक्यर कह सकते हैं, जिसकी अभिव्यक्ति मिथक है ।" – यूण
- "मिथक मानव जाति का सामूहिक सपने एवं सामूहिक अनुभव है और स्वप्न एक व्यक्ति के सूत्र आकांक्षा।" – डॉ रमेश कुंतल मेघ
- "मिथक तत्व वस्तुतः भाषा का पूरक है। सारी भाषा ही इसके बल पर खड़ी है, साहित्य में मिथक आनंद अनुभव का विश्लेषण है ।" – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
- "साहित्य के अनंत विस्तार को देखते हुए मिथक की दुनिया बड़ी छोटी है । नए कवि वर्तमान की आतित्व और अतीत के वर्तमानता में विश्वास करते हैं । समसामायिक अवस्था को ठोस और गहरे रंग में चरितार्थ करने हेतु कवियों ने पूरा घटाओ और मिथकों का भरपूर इस्तेमाल किया है ।" – डॉ नगेंद्र

परंपरागत कथाएँ अर्थात अनुश्रुत कहानियाँ जो संभवतः आदिमानव या किसी अलौकिक घटना पर आधारित होता है उसे मिथक कहा जाता है । देवी देवता संसार के उद्भव और इन पर भरोसा करने वाले विश्वासियों से इसका संबंध है । मिथक पर सवाल उठाने वाले लोग विरल है । मिथकीय विश्वासों को मनुष्य बिना किसी तर्क से ही स्वीकार करते है । "सामान्यतः मिथक एक

मिथ्य कथा है जिसकी सच्चाई की परीक्षा नहीं की जाती। फ्रेंज़र, हैरिसन एम एम कार्नफोर्ड़ आदि ने मिथक के सर्जनात्मक पहलुओं को आगे बढ़ाया है।"[2]

फ्रायड़ और उनके अनुयायी ने मिथक को स्वप्न के साथ तुलना करते हुए कहा है कि मिथक मनुष्य की अधूरी ख्वाहिशों को पूरा करने का एक मार्ग है । "जिस प्रकार हमारा अवचेतन मन सदैव अपनी दमित कामनाओं को दिवास्वपनों के द्वारा पूर्ण करता है उसी प्रकार आदिकाल से ही मानव अपने रागद्वेषजन्य इच्छाओं, वासनाओं तथा मृत्युजनेय संत्रास की भावनाओं को मिथक के रूप में प्रतिफलित करता था। ग्राहम हफ ने कहा है कि मिथक का विभिन्न भाषिक अभिव्यक्तियाँ हो सकती है । अधिकांश मिथक, 'मिथक' होते हैं तथा प्राकृतिक व्यवस्था तथा ब्रम्हांड की आदिम व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं । शास्त्रीय के लेखक के पास एक बना बनाया मिथक शास्त्र होता था। आज लेखकों ने अपना मिथक शास्त्र स्वयं तैयार किया है ताकि वह अपने विश्वासों का संवाहक बन सके। मिथकों को आदिम मनुष्य की चेतना का प्राथमिक सर्जनात्मक बिंब कहा जाता है । इसकी उत्पत्ति के संबंध में भी विवाद है कि भाषा पहले अस्तित्व में आया या मिथक।"[3]

1.1.2. मिथक का विकास

मानवीय संवेदनाओं की संरचना सहायक तत्व में मिथक का सबसे प्रमुख स्थान है । मिथक या पुराण कभी भी रातों-रात नहीं बनता, इनकी सृजन में हजारों साल लगते हैं । इसलिए मिथक का संबंध ऐतिहासिक काल से है । यह मानव संघर्षों की एवं धर्म संस्थापना की गाथा है इसीलिए मिथक अमर एवं शाश्वत है । मिथक देश की संस्कृति एवं परंपराओं की गठन का प्रमाण है जो एक काल्पनिक गाथा या गल्प नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक यथार्थ है ।

मिथक का संबंध मानव से ज्यादा उसके सामाजिक जीवन से जुड़ी है । मनुष्य जीवन से जुड़ी परंपराएँ, रीति रिवाज़, कोई प्रथा या अन्य कोई भी तथ्य से जुड़ी सत्य की खोज के उद्देश्य से ही मिथक का व्युत्पत्ति हुआ है ।

---

[2] मिथक किसे कहते हैं-अर्थ, परिभाषा अदाहरण सहित जानिए - हिंदी की बिंदी - https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s

[3] डॉक्टर जी कमलाधरन - आधुनिक हिंदी नाटक: मिथक के संदर्भ में - पृ. स 13

ब्रह्मांड एवं मानव जाति की उत्पत्ति कल्पना भरी सत्य कथा है । मिथक एक ऐसी रहस्यात्मक तथ्य है जो अतीत के संदर्भ में रहकर भविष्य से संबंधित दूरदर्शिता प्राप्त करने में हमारी सहायता करती है । मिथक भविष्य के लिए हमें आगाह करती है ।

वेदों से उत्पन्न में तत्व पूर्वजों से मिली एक सी विरासत है जो दैविक तत्वों की सहायता से इतिहास का गठन करता है । जब दुषचिंताएँ किसी विशेष संदर्भ में स्पष्ट विचार एवं कार्य के रूप में अंत होता है तो उसकी प्रतिक्रिया सहित मिथकों का जन्म होता है । मानवता की समूह एवं आदिम मनुष्यों की आवश्यकता में ही मिथक निहित है । मिथकों का विकास आदिम मनुष्यों से हुआ है । इसका जड़ मानव स्वभाव की गहराइयों में छिपा है । आदिम मानव द्वारा निर्मित इन कहानियों के पीछे ऐसे विश्वास है जो आगे चलकर मिथकीय दृष्टि बन गए।

कहा जाता है कि मिथक मानव के प्रारंभिक दस्तावेज़ है । आदिम मनुष्य प्राकृत, अज्ञान, निरीक्षण एवं अविकसित थे। उनके मन अविकसित होने के कारण उनके विचारों में काल्पनिकता अधिक थी। वास्तविक जीवन से कोसों दूर रहकर उन्होंने मिथकों का निर्माण किया। इनमें कल्पना शक्ति अधिक एवं बौद्धिक बोध कम दिखाई देता है । इसके परिणाम स्वरूप आदि मानवों की चित्रात्मक विचारों ने उनका भय, जिज्ञासा, कोतूहल जैसी भावनाओं ने विभिन्न अनुष्ठानों और रीति-रिवाज़ों को जन्म दिया।

1.2. मिथक - प्रकार एवं अन्य विधाओं से संबंध

प्रत्येक देश की परंपरा और वहाँ प्रचलित मिथक के आधार पर कई विद्वानों ने मिथक का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है । जैसे जॉर्ज कॉक्स ने अपने ग्रंथ 'माइथोलॉजी आफ आर्यन नेशंस' में मिथक को अंतरिक्ष, आलोक, अग्नि, वायु, जल, मेघ, पृथ्वी, आधोलोक एवं अंधकार जैसे प्राकृतिक तत्वों के आधार पर विभाजित करने का प्रयास किया है । किंतु वर्गीकरण के आधार पर सभी मिथकों के विषय क्षेत्र को परिलिक्षित करने में असफल थे। इसीलिए ए. जी. गार्डनर ने 'एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एंड एथिक्स' में मिथकों को बार श्रेणियों में वर्गीकृत किया, जैसे - ऋतु परिवर्तन से संबंधित मिथक, प्राकृतिक तत्वों से संबंधित मिथक, विशिष्ट या

असाधारण प्राकृतिक घटनाओं से संबंधित मिथक, सृष्टि की उत्पत्ति से संबंधित मिथक, देवताओं की उत्पत्ति से संबंधित मिथक, मनुष्य एवं पशु की उत्पत्ति से संबंधित मिथक, जीवो के रूपांतरण से संबंधित मिथक, वीरनायक एवं राष्ट्र से संबंधित मिथक, सामाजिक संस्थाओं एवं आविष्कारों से संबंधित मिथक, मृत्यु पश्चात आत्मा की स्थिति से संबंधित मिथक, दैत्यों एवं दानवों से संबंधित मिथक और ऐतिहासिक घटना से संबंधित मिथक। इसके अतिरिक्त भी कुछ विद्वानों ने विभिन्न विषयों के आधार पर मिथक का विभाजन करने का प्रयत्न किया है । किंतु मूलभूत रूप से हम मिथक को पाँच प्रकार में विभाजित कर सकते हैं जो निम्नलिखित है ।

1.2.1. मिथक के प्रकार

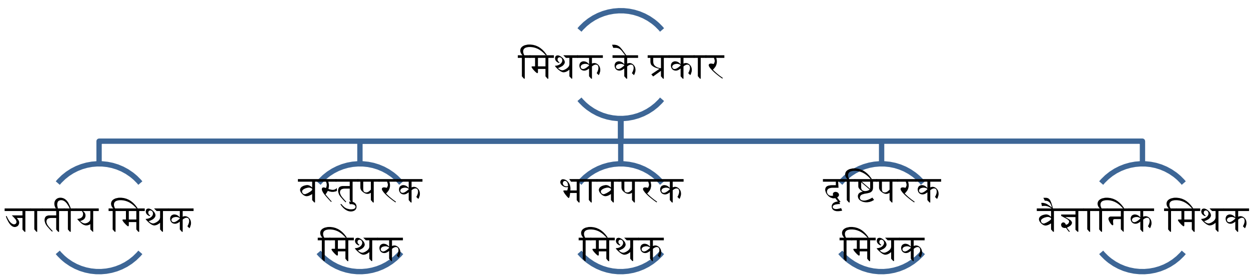

मिथक पाँच प्रकार के होते हैं – जातीय मिथक, वस्तुपरक मिथक, भावपरक मिथक, दृष्टिपरक मिथक ओर वैज्ञानिक मिथक। जातीय मिथक किसी देश, समुदाय, परिवार या व्यक्ति की वंश परंपरा से जुड़ी होती है । जातीय मिथक में वर्ण या आश्रम के आधार पर भेद नहीं होता इसमें गुणधर्म एवं क्रियाएँ विन्यस्त रहती है । वस्तुपरक मिथक में वस्तुओं की कल्पना का चिंतन धारणा एवं आधार उन्हें गुणवत्त प्रदान करती है । भाव अनुभूति का असली वाहक है और भावपरक मिथक का विकास मानव के सह अस्तित्व पर हुआ है। दृष्टिपरक मिथक में दर्शन प्रकटित होता है । इसका क्षेत्र विस्तृत है । आधुनिक काल में वैज्ञानिक सभ्यता के साथ मनुष्य के जीवन जीने के तरीके भी बदल गए । विज्ञान के विकास ने मनुष्य के भावुक मन को भी मशीनी बना दिया है । मिथक के कई प्रकार एवं भेद है जिसके कारण मिथक साहित्य अपने आप में समृद्ध हैं । आधुनिक साहित्य में मिथक का महत्व अपरिभाष्य है । अर्थात हम यह कह सकते हैं कि मिथक पारंपरिक संस्कृति का एक ठोस पाठक वाहक है ।

1.2.2. मिथक का विभिन्न विधाओं से संबध

- **मिथक और पुराण** – मिथक और पुराण के बीच में जो अंतर है वह काफी बारीक है । पुराण एक एसी सेतु है जो अतीत और साहित्य को वर्तमान के साथ जोड़ता है । "पुराण शब्द मन में कुछ ऐसी कथाओं की याद दिलाता है जो प्रायः दैवी होती है, जिनमें कोई भी परिवर्तन की कोई गुंजाइश नहीं होती। जब यह कथाएँ प्रतीकात्मकता स्वीकार कर परंपरा और युग बोध को आत्मसात करके एक नए कलेवर के साथ सामने आते हैं तो पुराण मिथक बन जाते हैं ।"[4]
- **मिथक और बिंब** – बिंब अंग्रेज़ी शब्द 'Image' का रूपांतरण है। भारतीय काव्यशास्त्र में बिंब शब्द चिंतन दृश्य विधान के रूप में मिलता है । वे शब्द चित्र जो कल्पनाओं के कारण ऐंद्रीय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है । बिंब को मिथक के माध्यम से व्यक्त रूप में प्रस्तुत करना आसान है । यह प्रतीकात्मक रूप में मनुष्य के मानसिक क्षेत्र में एक स्थिर व्यक्तित्व या चरित्र हासिल करती है । आगे चलकर यह चरित्र मिथकीय कथा में परिवर्तित होता है ।
- **मिथक और संस्कृति** – मिथक मनुष्य की सांस्कृतिक विरासत के रूप में बसा हुआ हर जाति और संस्कृति का शक्ति स्रोत है । संस्कृति ने जिन को अपनाया वे मिथक बन गए, उदाहरण के लिए भारतीय संस्कृति के तीन महान मिथक शिव, राम और कृष्ण । किसी भी संस्कृति के आधार को समझने के लिए उसकी मिथकीय अध्ययन करना आवश्यक है और इन मूल्यों को नष्ट होने से बचाने का श्रेय सार्वभौमिक एकता को जाता है । जब श्रद्धा या विश्वास नष्ट हो जाता है तब समाज मिथक की ओर मुड़ जाता है । संस्कृति के शक्ति स्रोत होने के कारण मिथकों में कई संभावनाएँ हमें देखने को मिलता है ।
- **मिथक और जीवन दर्शन** – मिथक ऐसी गाथाएँ हैं जो परंपरा पर आधारित हैं । इनमें कई मिथक की वास्तविक उत्पत्ति खोजेने पर मिलने की संभावना है और कभी काल्पनिक होती है । मिथक कहानी मात्र नहीं है, इसने प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृतियों की गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है । मिथक कालातीत प्रश्नों का उत्तर देते हैं और प्रत्येक पीढ़ी के

---
[4] डॉ लीना बी. एल. – मिथक नाटक और रंगमंच – पृ स 64

लिए एक मार्गदर्शक बनता है । मिथक लोगों को यह आशा देता है कि न्यायपरक जीवन व्यतीत करने से परलोक प्राप्त हो सकता है । कुछ मिथक प्रकृतिक घटनाओं के पीछे की कारण को समझने का प्रयास करता है । कुछ मिथक शिक्षाप्रद भी होता है जो आनाचार, भ्रतृहत्या, लालच जैसे सांस्कृतिक वर्जनाओं को लेकर सामाजिक मानदंडों के मार्गदर्शक के रूप में भी काम करते हैं । इस प्रकार मिथक, जीवन में सुधार और सुवर्ण भविष्य के लिए उम्मीद प्रदान करता है । "मिथक साहित्य में जीवित स्पंदनों का ऐसा संगम दिखाया जाता है जो व्यवहार जगत में शुद्ध बुद्धि के द्वारा ग्रहण किया जाता है ।"[5]

- **मिथक और वेद –** वेद भारतीय संस्कृति के प्राचीन एवं धार्मिक ग्रंथों का समूह है । "वेद एक चिंतन धारा है जो प्रज्ञाशील तथा प्रकृति के अन्तर्यामी तत्व, महानुभावों ने अनुभवगम्य की और युग-युग के लिए उनके अनुभव विज्ञान का जो लाभ मिलता चला गया, उसी को ज्ञान कहा गया है ।"[6] इस ज्ञान को व्यक्त करने का माध्यम ही वैदिक मिथक है । इसमें मिथकीय कथाओं को लेकर संगीत, रस संभाषण जैसे तत्वों की प्रतीकात्मक अभिव्यंजना है । पीढ़ी दर पीढ़ी यह मिथक के रूप में परिवर्तित होता रहता है ।
- **मिथक और यथार्थ –** मिथक यथार्थ तक पहुंचने का एक मार्ग है। मिथक अध्यात्मिक दुनिया को समझने की शक्ति रखता है । इसमें इतनी ज्ञान बसा है कि व्यक्ति एवं सामाज की विकास में मदद करता है। मिथकीय यथार्थ वह है जो दुनिया को कई गहरी वास्तविकताओं का दर्शन कराता है। मिथक एक ऐसी साहित्यिक प्रयोग है जो यथार्थ की अभिव्यक्ति का माध्यम है ।
- **मिथक और रहस्य** – लंबी समय तक मिथक प्राकृतिक दुनिया की विशेषताओं के लिए स्वीकृत व्याख्या थी किंतु जैसे विज्ञान का विकास होने लगा, मिथक केवल मनगढ़त कहानियाँ बन गई। विज्ञान द्वारा विश्व की रहस्यों की इंद्रियगम्य व्याख्या होने के बावजूद भी उत्तर जानने की मानवीय अवश्यकता कभी कम नहीं हुई। "मिथक जीवन की रहस्यात्मक

---

[5] डॉ लीना बी. एल. – मिथक नाटक और रंगमंच – पृ स 64

[6] डॉ लीना बी. एल. – मिथक नाटक और रंगमंच – पृ स 65

गुणवत्ता का स्पर्श करता है जिससे ही मन यह रहस्य कहते हैं।"[7] मिथक का प्रयोग अज्ञात है और यह भौतिक विश्व के रहस्यों का उद्घाटित करती है । मिथक और रहस्य परस्पर मिला हुआ है ।

- **मिथक और कल्पना –** मिथकीय कहानी और सपने मानव की कल्पना शक्ति का समृद्ध परिभाषा है । हर बड़े आविष्कार सबसे पहले सिर्फ एक सोच था। कार्ल जुग और जेम्स हिल्लमन जैसे मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मानस (Psyche) या आत्मा (Soul) का मनुष्य से अलग एक स्वतंत्र अस्तित्व है । मिथक मन की मौलिक भाषा है। मिथक कल्पना से जुड़ जाने पर रमणीय, रागात्मक और आनंदमय बन जाते हैं। मिथक मानवीय कल्पना शक्ति का एक क्रियात्मक रूप है । इसने कल्पना को आकृत किया और साथ ही साहित्य को भी स्वरूप प्रदान किया ।
- **मिथक और परंपरा –** एक जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के हिस्से के रूप में मिथक कई वर्षों से विकसित हुई है । एक समाज की संस्कृति में उनके मिथक का उत्पन्न लिखित रूप में नहीं होता बल्कि वह मौखिक रूप से प्रसारित होते हैं । पारंपरिक होने के कारण ही मिथक एक सामूहिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया का परिणाम है । इसका कोई एक लेखक होना संभव नहीं है । परंपरा में सभ्यता मिथक के ज़रिए ही जीवित रहता है ।
- **मिथक और भाषा –** मानव जीवन के सभी पहलुओं को मिथक एवं उसकी प्रणालियों के माध्यम से देखा जा सकता है और भाषा भी हमारे अस्तित्व के लिए उतनी ही जरूरी है । साहित्य की क्षेत्र में यह दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं । मिथक पर चर्चा भाषा के माध्यम से होता है । मिथक से भाषा और भाषा से मिथक तक पहुँचने की प्रक्रिया विस्तृत है और इतिहास इन प्रक्रियाओं में बड़े पैमाने में परिवर्तित होते हुए साक्ष्य बना है । मिथक और साहित्य के प्रभाव से केवल काव्य और कलात्मक भाषा में परिवर्तन नहीं आया है बल्कि दर्शन एवं इतिहास जैसे अन्य विमर्शों में भी यह विविधता देखने को मिलता है । भाषा और मिथक का गहरा संबंध है क्योंकि यह दोनों अन्योन्याश्रित है । सत्य तक पहुँचने का एक मार्ग भाषा है और मिथक भी सत्य तक पहुँचने का दूसरा मार्ग है ।
- **मिथक और धर्म –** मिथक और धर्म एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी कई आतिव्यापी पहलू है । यह दोनों शब्द उन अवधारणाओं की प्रणालियों को

[7] डॉ लीना बी. एल. – मिथक नाटक और रंगमंच – पृ स 66

इशारा करता है जो एक समुदाय के लिए अत्यंत महत्व रखता है । यह अलौकिकता और पवित्रता से संबंध रखता है । आमतौर पर मिथक को धर्म का एक पहलू माना जाता है । इसीलिए मिथक का धर्म से बहुत ही गहरा संबंध है । मिथकीय तत्वों का हर अंग धार्मिक तत्वों से भरा होने के कारण कुछ लोग मिथक को धर्म गाधा भी मानते हैं । "इसे पूर्ण धर्म गाथा नहीं माना जा सकता क्योंकि धर्म गाधा के आवरण में समाज के सांस्कृतिक मूल्य, गहन आस्था और विश्वास की अभिव्यक्ति सन्निहित होती है। मिथक के साथ का दर्शन धार्मिक कथा की परत को उखाडकर ही देखा जा सकता है।"[8]

- **मिथक और जादु –** आदिम मनुष्यों की गूढ़ प्रवृत्तियों के कारण जादू का जन्म हुआ था। धर्म और जादू दोनों में ही अनुष्ठानों का महत्व है। मिथक में जादुई तत्व समाहित होता है। नायकों के अलौकिक रूप के साथ मिथक और उनके जादुई तत्वों की समावेश से उत्पन्न काव्य मिथक को धार्मिकता प्रदान करता है। अतः जाति धर्म और मिथक का गहरा संबंध है।
- **मिथक और इतिहास –** मिथक मात्र कहानियाँ नहीं है । इसका प्राचीन एवं आधुनिक संस्कृति के निर्माण में अहम भूमिका है । मिथक का समर्थन करने के लिए कोई ठोस सबूत प्राप्त नहीं है, किंतु इतिहास का समर्थन करने के लिए कई सबूत उपलब्ध है । मिथक में एक देश का पावन इतिहास का संयोजन होता है । मिथक ने मनुष्य के अंदर इतिहास को समझने का जिज्ञासा पैदा की है । मिथक एक घटना घटित होने के पूर्व और इतिहास घटना घटित होने के लंबे समय पश्चात बनता है ।
- **मिथक और स्वप्न –** स्वप्न और मिथक बेशक अलग जरूर है किंतु इनमें अद्भुत समानताएँ भी हैं । स्वप्न एक व्यक्ति के अचेत मन का उत्पाद है और अक्सर मिथक की पृष्ठभूमि स्वप्न होता है । कभी-कभी तो चेतना को आकार देने वाली विस्तृत कलात्मक कथा का उत्पाद होता है । मिथक और स्वप्न के लिए प्रयुक्त सामान्य भाषा का प्रतीक भाषा कहा जाता है । मिथक एक प्रागैतिहासिक घटना है जब कि स्वप्न एक प्रतीकात्मक इच्छा की अभिव्यक्ति है ।

[8] डॉ लीना बी. एल. - मिथक नाटक और रंगमंच - पृ स 69

- **मिथक और मानोविज्ञान** – मिथक एक समाज के आंतरिक संघर्ष और इच्छाओं की अभिव्यक्ति है । अचेत मन में बसे भय और इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता है इसलिए हमें कह सकते हैं कि मनोविज्ञान मिथक के अंतर्गत आता है । मनोविज्ञान के अनुसार मिथक, मनुष्य की संवेदनाओं का बुद्धि संगत व्याख्यान या मान्यता प्रदान करने का अचेतन प्रक्रिया है । केवल एक व्यक्ति का चेतन या अचेतन मन से स्वप्न या कथा कि सृष्टि मात्र ही संभव है, मिथक का निर्माण नहीं। किंतु एक समूह के अचेत मन मिथक की सृष्टि करने में सफल होता है और यह सार्वभौमिक बनता है ।
- **मिथक और दर्शनशास्त्र** – मिथक परंपरा से जुड़ी मान्यताओं एवं मूलभूत पहलुओं की बौद्धिक व्याख्या देने का प्रयत्न करता है तो दर्शनशास्त्र उपलब्ध ज्ञान एवं यथार्थ की मौलिक प्रकृति के संबंध में उत्तर देता है। दर्शनशास्त्र मिथक का विरोध करता है क्योंकि यहाँ ज्ञान का आधार अनुभूति न होकर प्रमाण है। मिथक मानव ज्ञान का पहला रूप है । किंतु दर्शनशास्त्र इसे स्वीकार नहीं करता। "दर्शन की शब्दावली में मिथक का अर्थ है एक ऐसी काल्पनिक कथा जो जीवन और जगत से संबंध विचार प्रस्तुत करें दर्शन के लिए कथा और उसमें निहित विचार का अलग अस्तित्व है । दर्शन को पूराण विधा का शत्रु माना जाता है । मिथक अपने आप में प्रमाण है किंतु दर्शन मिथक में निहित तत्व को ही प्रमाण माना है । आधुनिक युग में भौतिक दर्शन एवं विज्ञान का विकास होने लगा ओर दर्शन मुख्यधाराओं में से एक बन गया। तब मिथक का चित्रमय विश्व बिखरना भी शुरू हो गया।

1.3. भारतीय मिथक

भारतीय मिथक भारतीय संस्कृति को समृद्ध एवं आद्वतीय बनाने वाली एक तत्व है जो हज़ारों साल पुरानी है । भारतीय मिथक से संबंधित गाथाएँ एवं रूढ़ियाँ पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से या किसी संग्रहित ग्रंथों के माध्यम से हमें प्राप्त होती आ रही है । मौखिक संचार के माध्यम प्रारित-संग्रहित ग्रंथों में सबसे प्रमुख है वेद। जिसके कारण वेद को 'श्रुति' भी कहा जाता है । वेद शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के विद् शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है 'ज्ञान होना'। ऐसा माना जाता है कि वेदों में मनुष्य के हर समस्या का समाधान है । वेद सबसे प्राचीनतम पुस्तक है । इसमें भारतीय दर्शन का सार समाहित है । वैदिक अध्ययन भारत-यूरोपीय भाषाविज्ञान के साथ-साथ प्राचीन भारतीय इतिहास को समझने के लिए भी सहायता करता है ।

1.3.1. वेद

वेद मानव सभ्यता के लगभग सबसे प्राचीन लिखित दस्तावेज है । श्लोकों का स्मरण करके व मौखिक रूप से आदान प्रदान करके वदों को काफी समय तक जीवित रखा गया। यह ज्ञान और विज्ञान का ग्रंथ है । ज्ञान अर्थात अनादि मूल तत्व का वर्णन एवं उसका परस्पर संबंध और विज्ञान अर्थात कार्य जगत के विभिन्न पदार्थों का वर्णन। यूरोप के विध्वान के अनुसार वेद दो या तीन सहसत्र वर्ष पूर्व लिखे गए हैं और वह काल 'वैदिक काल' नाम से जाना जाता है । वैदिक काल में हमारे ऋषियों के पास जो ज्ञान था वह इतना उत्कृष्ट था कि उसका आज के ज़माने में पाई जाने वाली किसी भी ज्ञान से तुलना नहीं की जा सकती। वेद उतने पुराने हैं जितने परमात्मा, देवात्मा और प्रकृति है । अर्थात इनका आदि अंत बताना कठिन है । यह बात वेद में ही उल्लेखित है कि इनका आविर्भाव पृथ्वी पर मानव सृष्टि होने से बहुत पहले से ही हो रहा था। वेद साहित्य में प्राचीन भारत में राष्ट्रवाद के विकास में बहुत योगदान दिया है।

वैदिक साहित्य के अंतर्गत उपनिषद, ब्राह्मण ग्रंथ, वैदिक साहिताएँ आरण्यक एवं वेदांग संहिताएँ आते हैं । वेद के संबंध में प्रचलित सबसे प्रसिद्ध मिथक यह हैं कि सैकड़ों साल पहले ऋषियों ने ज्ञान प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या की जिससे वे ईश्वर की आवाज़ सुनने लगी। इस आवाज़ से मिली ज्ञान को मौखिक रूप से ऋषियों ने अपने शिष्यों के साथ सहभाजित किया। वैदिक ज्ञान को विभिन्न शाखाओं में बाँटा जा सकता है, जिनमें लोकप्रिय शाखाओं के रूप में वेदांत, वास्तु, आयुर्वेद, ज्योतिष और योग शामिल हैं ।

आदि ज्ञान के भंडार वेद के चार भाग है- ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद एवं अथर्ववेद।

ऋग्वेद

- रिक् का अर्थ है - स्मृति
- इसमें इंद्र, रूद्र, अग्नि जैसे ईश्वर की स्तुति है ।
- यह वेद का सबसे प्राचीनतम रूप है ।
- ऋग्वेद दस पुस्तकों का संग्रह है जिन्हें मंडल कहा जाता है ।
- इसमें 1028 सूक्त है ।

यजुर्वेद

- यजुर का अर्थ है कर्मकांड।
- इस वेद में देवताओं के लिए किए जाने वाले बलिदान एवं अनुष्ठानों के मंत्रों का उल्लेख है ।
- यजुर्वेद को दो भागों में विभाजित किया है कृष्ण (अंधेरा) एवं शुक्ल (उज्जवल)।

सामवेद

- साम का अर्थ गीत।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य का आधार है ।
- यह मंत्रों की भंडार है ।
- इसमें उल्लेखित अधिकांश श्लोक ऋग्वेद से लिए गए हैं ।
- सामवेद के श्लोक का 'जाप' नहीं बल्कि गायन होता है ।

अथर्ववेद

- अथर्व का अर्थ है अकंपन।
- इसमें जीवन की दैनिक प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है ।
- इसमें तरह-तरह के रोग एवं इन रोगों की चिकित्सा विधि के बारे में उल्लेखित है ।
- विज्ञान, गणित, चिकित्सा, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी जैसे विषय से संबंधित ज्ञान होने के कारण यह आधुनिक समाज के लिए अधिक उपयोगी साबित हुआ है ।

वेदों के चार प्रकार होते हैं - मंत्र संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद

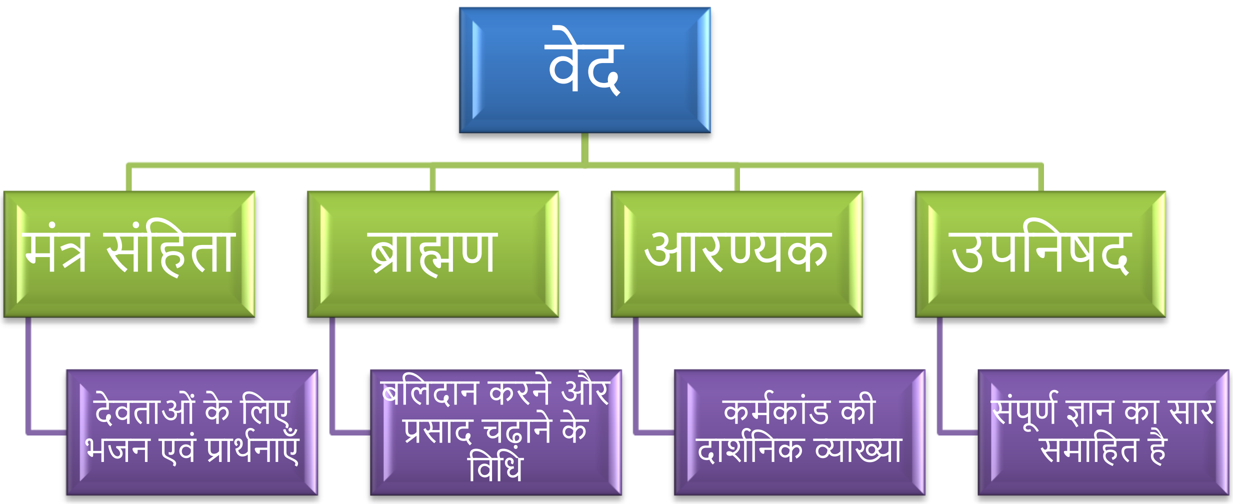

1.3.2. पुराण

'पुराण' एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है प्राचीन या पुराना। पुराण को हिंदू धर्म के संबंध में लिखी गई सबसे प्राचीन भारतीय साहित्य का हिस्सा माना जाता है । इन ग्रंथों की संकलन को पाँचवा वेद भी कहा जाता है । इसमें ब्रह्मांड विज्ञान, लोक कथाएँ, धर्म शास्त्र, दर्शन व्याकरण, योग विज्ञान सहित विभिन्न विषयों के संबंध में गहरा ज्ञान हमें प्राप्त होती है । इसमें ब्रह्मांड की सृष्टि से लेकर इतिहास तक का विशद वर्णन है। पहले पुराण को तीसरी एवं दसवीं शताब्दी के बीच के समय में संकलित किया है ।

भागवत पुराण को सबसे प्रथम पुराण माना जाता है । इसमें भगवान विष्णु के आठवें अवतार भगवान कृष्ण के संपूर्ण जीवन का वर्णन किया गया है। प्राचीन ग्रंथों में 18 पुराण ग्रंथों का वर्णन मिलता है, जो है – 1) ब्रह्मा पुराण 2) पद्म पुराण, 3) विष्णु पुराण, 4) वायु पुराण (शैव पुराण), 5) भागवत पुराण, 6) नारद पुराण, 7) मार्कंडेय पुराण, 8) अग्नि पुराण, 9) भविष्य पुराण, 10) ब्रह्मा वैवर्त पुराण, 11) लिंग पुराण, 12) वराह पुराण, 13) स्कंद पुराण, 14) वामन पुराण 15) कूर्म पुराण, 16) मत्सय पुराण, 17) गरुड़ पुराण, 18) ब्रह्मांड पुराण

विष्णु पुराण में रामायण और महाभारत एक ही कथा के दो अध्याय हैं । विष्णु 'अध्याय एक – रामायण' में राम का और 'अध्याय दो – महाभारत' में कृष्ण का अवतार लेते हैं ।

वैदिक साहित्य विशाल और विविध थे जिसमें ऋषियों और संतों के उच्च आध्यात्मिक विचार समाहित थे जो कोई विद्वान ही समझ सकता था। साधारण जनता के लिए वेद, उपनिषद, आरण्यकों या संहिताओं के गहरे दर्शन को समझना कठिन था। ऋषियों और संतों ने इस बात को समझा और इस ज्ञान को सार्वभौमिक बनाने के लिए दो महान महाकाव्यों की रचना की जो थे रामायण और महाभारत।

1.3.3. कालजयी महाकाव्य रामायण और महाभारत

जब वैदिक साहित्य की अवधारणा और उपनिषदों के आध्यात्मिक विचारों ने समाज में उसका प्रभाव दिखाने लगा तब एक नई साहित्य प्रवृत्ति राष्ट्रवादी विचार के साथ समृद्ध होने लगी। तब ऐसी नैतिक कहानियों का

समाज में जगह नहीं मिलने लगी, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का आह्वान करता हो । वाल्मीकि द्वारा लिखित रामायण इस नई साहित्यिक प्रवृत्ति के सबसे कलात्मक रचनाओं में से एक है । एक महाकाव्य के साथ भारतीय साहित्य में एक नए युग की शुरुआत हुई। इस महाकाव्य को 'आदि काव्य' भी कहा जाता है ।

1.3.3.1 रामायण

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण अपनी गरिमा और विषय की विविधता में एक अद्वतीय महाकाव्य है । इसमें भारतीय हृदय में संचित भावनाएँ, धार्मिक विश्वास एवं दर्शन, सभ्यता, एवं संस्कृति, राष्ट्र, राज्य और राष्ट्रीय के संबंध में जो विचार है वह परिलक्षित हुए हैं । यह महाकाव्य मनुष्यराशी की समक्ष कब प्रकट हुआ, इसका एक ठोस प्रमाण देना कठिन है । कवी ने इस अमर कृती के माध्यम से एक पूरे देश, एक पूरे काल और एक पूरी संस्कृति की संरचना की जो, पूरे भारतवासियों का विरासत बन गया।

आधुनिक काल के विद्वनों का यह मानना है कि रामायण का पहला रूप संस्कृत में लगभग दो हज़ार पाँचसो साल पहले लिखा गया था। भारत के विभिन्न काल खंडों में, विभिन्न भाषा एवं साहित्य में रामायण को एक प्रबल साहित्य के रूप में स्वीकार किया गया। रामायण में निहित राष्ट्र की सामाजिक, धार्मिक, एवं आदर्शवादी अवधारणा और उनके सिद्धांत हर काल में लोगों को प्रेरणा देंगे ओर मानवता को बनाए रखने वाले मूल्यों का ज्ञान भी प्रदान करें।

हिंदी, बंगाली, असमिया, तमिल, तेलुंगु, मणिपुरी, मराठी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में रामायण के विभिन्न संस्करण उपलब्ध है जो धार्मिक रूप से लोगों को प्रभावित किए है । यहाँ तक की गरो, खासी, मिज़ो, कोकबोरोक जैसे पूर्वोत्तर भारतीय राज्यों में बोली जाने वाली भाषाओं के सामाजिक के संस्करण की व्यापक रूप से लोकप्रिय है । रामायण के ये संस्करण वाल्मिकी रामायण से विचलित होने पर भी इसकी कथानक एवं मूल संरचना में समानता है । यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत तथ्य हैं कि रामायण भारत व अन्य देशों के लोगों के अंदर नैतिक मूल्यों की निर्माण में काफी बड़ा योगदान दिया है । वे सभी देश जिन्होंने अतीत में भारतीय

धार्मिक परंपरा को अपनाया था उनमें रामायण का प्रभाव हमें देखने को मिलता है ।

वाल्मीकि रामायण भारतीय संस्कृति की एक ऐसी पुनः सृजन है जिसमें प्राचीन भारत के उच्च आदर्श एवं सौंदर्यशास्त्र शामिल है। भारतीय सभ्यता एवं परंपरा का स्रोत होने के कारण दो हज़ार वर्ष से अधिक समय से रामायण को एक इतिहास ग्रंथ का स्थान प्राप्त है । पौराणिक काल में राम और सीता जैसे आदर्श पुरुष एवं स्त्री के सत्य के प्रति भक्ति को दिव्य एवं प्रभावशाली माना जाता था। रामायण इतिहास है, काव्य है, दर्शन एवं राजनीति है । दूसरों की सुख के लिए आत्म परित्याग ही इस महाकाव्य का प्रमुख विषय है । रामायण में जिस प्रकार श्रद्धा और स्नेह का चित्रण हुआ है, वह दिल को छू लेने वाला है । आदर्श मानव जीवन का प्रतीक होने पर भी राम अपने जीवन के दुख एवं कष्ट से बच नहीं सका। इसमें हम इस महाकाव्य के भावनात्मक पहलू को खंडित करते हैं ।

1.3.3.2. महाभारत

भारतीय लोकजीवन पर जितना प्रभाव रामायण का है उतना ही प्रभाव महाभारत का भी है । रामायण की तुलना में महाभारत की रचना की पृष्ठभूमि अधिक व्यापक, कथानक का निर्माण जटिल एवं पौराणिक पात्रों में अधिक विविधता है । एक लाख से अधिक श्लोकों के से युक्त यह महाकाव्य भारतीय संस्कृति की अभिव्यंजना के छवि के रूप में प्रकट होता है । वेदव्यास द्वारा रचित यह अनुपम रचना को आज पूरी दुनिया में मानव सभ्यता की सबसे बड़ा सबूत माना जाता है । एक राष्ट्र की पहचान उनकी सभ्यता, संस्कृति एवं उनकी विचारधाराओं में अंतर्निहित होती है । भारत की संबंध में यह बात हमें राष्ट्र की सबसे बड़ी साहित्यिक लेखन महाभारत में देखने को मिलता है ।

महर्षि कृष्ण द्वैपयाना वेदों को चार भागों में बाँटा और 'पाँचवे वेद' के रूप में महाभारत का सृजन किया जिससे उन्होंने 'वेद व्यास' की उपाधि प्राप्त किया। महाभारत को हम एक विशाल विश्वकोश मान सकते है क्योंकी यह विविध प्रकार के विषयों के विशद विवरण से समृद्ध है। यह महाकाव्य विज्ञान, इतिहास, पौराणिक, कथाएँ, धर्मशास्त्र, शासन नीति, लोकज्ञान,

कहावत, जीवन के संपूर्ण एवं संकल्प नैतिक सिद्धांत, समाजशास्त्र, धन, नीति, भोग एवं मोक्ष और इनसे संबंध सिद्धांतों की ज्ञान भंडार है ।

इस महाकाव्य के पहले भाग में एक बिखरा हुआ राजसी कुटुंब, अपने उत्तराधिकार की संघर्ष को विभिन्न तरीकों से हल करने का प्रयत्न करता है, जिसमें जुआ, प्रवंचना, हत्या और विभिन्न प्रकार के समझोते शामिल है। लेकिन वे असफल होते हैं जिसके कारण युद्ध छिड़ जाता है। आगे महाभारत युद्ध की शुरुआत होता है जिसमें युद्ध के सभी नियम टूट जाते हैं और अत्याचार होते रहते है। लाशों से भरी युद्ध के मैदान में बस पांडव बच जाते है। अंत में पांडव अपने पुत्रों और भाइयों को युद्ध में खोने के बाद हस्तिनापुर में शासन करते हैं। सालों बाद उनकी भी मृत्यु हो जाती हैं ।

महर्षि वेदव्यास के महाभारत में प्राचीन भारत की महिमा और समृद्धि के इतिहास को दर्शाया है । यह महाकाव्य आकार में काफी बड़ा है। यह धर्म, विश्व की कल्याण एवं नैतिक मूल्यों के लिए लड़े हुए युद्ध की गाथा है, जो पाण्डव एवं कौरव के बीच लड़े गये थे। इस महाकाव्य का सार ईश्वर की रहस्यमई कृत्यों, आदर्श भारतीय जीवन, व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय संघर्षों से परे बलिदान की महान पवित्रता की भीतर निहित है । यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि यह महाकाव्य मनुष्य की महानता का एक शाश्वत भंडार है, जो उसकी श्रेष्ठता एवं गहराई के कारण 'महाभारत' नाम से जाना जाता है ।

महाभारत का मुख्य उद्देशय कुरुक्षेत्र के महान युद्ध की घटनाओं का वर्णन करना नहीं है । इस महाकाव्य का केंद्रीय विषय असत्य या अधर्म पर सत्य अथवा धर्म की जीत को उभारना है । महाभारत की अध्ययन विधि के संबंध में ऐसा कहा गया है कि नारायण, देवी सरस्वती और व्यास को प्रणाम करने के साथ-साथ जय शब्द का उच्चारण करके का अध्ययन आरंभ करना चाहिए। यह जय शब्द युद्ध में जीत का नहीं बल्कि धर्म और सत्य की विजय का प्रतीक है ।

महाभारत प्रतीकवाद और रूपक में समृद्ध है। यह काव्य इस गहन सत्य को दर्शाता है कि जो कोई भी परमात्मा को अपने सारथी के रूप में स्वीकार करेगा वह उसके मार्गदर्शक होंगे। ईश्वर उस पद को निम्न नहीं समझता। पांडव पाँच थें जबकि कौरवों की संख्या सौ थें इसका अर्थ है कि

मनुष्य की बुराई करने की प्रवृत्ति भलाई करने की उसकी प्रवृत्ति से कहीं अधिक है ।

असमानता और मानवीय पीड़ा जैसे जीवन तथ्यों का उद्धरण महाभारत में हुआ हैं। आज की दुनिया में अन्याय, वंचना या अनीति क्यों और कैसे होते हैं इस बात को महाभारत की परिप्रेक्ष्य पर देखा जाए तो हमें एक स्पष्ट अवधारणा प्राप्त होंगे।

इरावती कर्वे ने एक बार कहा था की रामायण और महाभारत दोनों ही महाकाव्य है। किंतु इनमें रामायण को काव्य एवं महाभारत को इतिहास के रूप में अपनाया जाता है । महाभारत के पात्र मानवीय दुर्बलताएँ एवं दोषों से भरी मनुष्यों की कहानी है । इसमें लगभग सभी पात्रों की व्यक्तित्व में अच्छाई और बुराई के मिश्रण है । दूसरी ओर संपूर्ण रामायण एक आदर्श पुरुष की स्तुति है । जैसे राम आदर्श पुरुष हैं, वैसे ही सीता आदर्श नारी हैं । वास्तव में रामायण, आदर्श पात्रों से भरी हुई है । महाभारत हमें यह सिखाती है कि यदि हम धर्म का सम्मान करते हैं, तो धर्म हमारे सम्मान करेगें। यदि हम धर्म का पालन करेंगे, तो धर्म हमारा अनुसरण करेगें।

1.4. पाश्चात्य मिथक

अंग्रेजी शब्द मिथ को ही हिंदी में मिथक कहा जाता है और इस शब्द का उद्भव यूनानी भाषा के माइथॉस शब्द से हुआ है। इसलिए मिथक की शुरुआत युनानी संस्कृति से मानना गलत नहीं होगा। कोशीय अर्थ में "मिथक परंपरागत तथा अनुश्रुत कथा है जो किसी अतिमानवीय तथा कथित व प्राणी या घटना से संबंध रखती है।"[9] मिथक के रचनात्मक कार्यों को आगे लेकर जाने वाले पाश्चात्य चिंतकों में फ्रेंज़र, हेरिसन, कार्नोफोड़ आदि के नक्शा आदि के नाम उल्लेखनीय है। ग्रहाम हाफ के अनुसार "मिथक किसी विशिष्ट भाषिक संरचना में बंधि नहीं रहता। एक ही मिथक की विभिन्न भाषिक अभिव्यक्तियाँ हो सकती है।"[10]

---

[9] मिथक किसे कहते हैं-अर्थ, परिभाषा अदाहरण सहित जानिए - हिंदी की बिंदी - https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s

[10] मिथक किसे कहते हैं-अर्थ, परिभाषा अदाहरण सहित जानिए - हिंदी की बिंदी - https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s

पाश्चात्य विद्वान प्राचीन काल में मिथकों को काफी महत्व देते थे और इन पर साहित्य रचनाएँ भी करते थे। पाश्चात्य मिथक में सबसे प्रमुख मिथक है ग्रीक मिथक।

1.4.1. ग्रीक मिथक

मिथक का सबसे प्रमुख शाखा, ग्रीक मिथक मूल रूप से प्राचीन यूनानी लोककथाओं की एक शैली है और प्राचीन यूनानियों द्वारा कहे गए मौखिक कहानियाँ हैं। प्राचीन यूनान जीवन का चित्रण क्लासिकल मिथक में किया है उस आधार से यह कोसों दूर है। आदिम ग्रीक मनुष्य ने भी जंगली एवं क्रूर जीवन व्यतीत किया है किंतु इसका उल्लेख हमें ग्रीक के प्राचीन साहित्य में देखने को नहीं मिलता।

ग्रीक मिथक की शुरुआत होमर की इलियाड से मानी जाती है । ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह ग्रंथ ईसा पूर्व हज़ार वर्ष से पहले लिखा गया है। इलियाड में सबसे प्राचीन ग्रीक साहित्य एवं संसकृति देखने को मिलती है । इसकी भाषा सुंदर एवं पुष्ट है । इसे सभ्यता की सबूत कहना भी गलत नहीं होगा। ग्रीक मिथक की कहानियाँ आदी मानवता का एक स्पष्ट चित्र नहीं देता। मिस्त्र (Egyptians) के लोग से भिन्न, ग्राक लोग ने अपने ईश्वर का खुद एक स्वरूप बना लिया है । सालों बाद ब्रह्मांड का केंद्र विश्व के सबसे अहम सृष्टि मनुष्य बन गए। हज़ार साल पहले ग्रीक कवि या लेखक मनुष्य से पहले की दुनिया के बारे में कभी नहीं सोचा। उनके इतिहास और पुराण में मनुष्य ही केंद्र बना जो आगे चलकर क्रांतिकारी सोच साबित हो गये।

मनुष्य के रूप में भगवान ने ग्रीक को एक घर जैसा एहसास दिया। वे इन देवीय अस्तित्व को समझते थे। उन्हें यह पता था कि वे क्या पीते हैं और क्या खाते हैं । वे अपने मनुष्य रूपी ईश्वर और उनके क्रोध से डरते जरूर है किंतु लोगों ने इनके साथ एक सहज भाव भी महसूस किया। उनको अपनी ईश्वर पर हंसने का हक था। पत्नी से अपने अन्य प्रेम संबंधों को छुपाने के लिए प्रयत्न करने वाले ज़ियस देव को ग्रीक पसंद करते थे। देवी हीरा एक ईर्षयालू पत्नी थी जो छल कपट करके अपने पति के लिए तरह तरह की असुविधाएं पैदा करती थी और अपने प्रतिद्वंद्वी को दंड देती थी। उन्हें ग्रीक कभी नापसंद नहीं किया। ग्रीक लोगों की देवी देवता इतने आकर्षक थे कि वह अन्य देशों के लोगों के लिए भी सौंदर्य का मानक रूप में स्वीकार करने लगा।

किसी भी सुंदर व्यक्ति की सोंदर्य का विशेषण करने के लिए उन्हे ग्रीक भगवान के साथ तुलना करना शुरु हुआ।

यह ग्रीक मिथक का चमत्कार है कि उन्होंने ऐसी दुनिया की संरचना की जहाँ के मनुष्य को अदृश्य या अमृत शक्ति के भय से स्वतंत्र है। ग्रीक मिथक की दुनिया मनुष्यात्मा के अंदर भय जगाने वाली नहीं है। ग्रीक मिथक के प्रारंभिक दौर के लेखक ने भय से भरी दुनिया को सुंदरता से भरी दुनिया में बदल दिया। ग्रीक मिथक के कुछ पोसेडियन, एफ्रोडाइट, ज़ियस जैसे भगवान विश्व भर में काफी प्रसिद्ध हैं। जूतों की निर्माण करनेवाली विश्व प्रसिद्ध कंपनी 'नाइके' (Nike) का नाम ग्रीक मिथक के जीत के देवता (God of Victory) के नाम पर रखा गया है। हॉलीवुड में ग्रीक मिथक के आधार पर पर्सी जैकसन, क्लाश ऑफ टाइटनंस, हेरकुलस जैसे कई प्रसिद्ध फिल्में भी बन चुकी है। ग्रीक पौराणिक कथाओं का पश्चिमी सभ्यता की संस्कृति और साहित्य पर व्यापक प्रभाव पड़ा है और यह पश्चिमी विरासत का हिस्सा है। प्राचीन काल से वर्तमान काल तक की कवियों और कलाकारों ने ग्रीक पौराणिक कथाओं से प्रेरणा लेकर कई सारे लेखन कार्य रची हैं।

सेंट पॉल ने एक बार कहा था कि अदृश्य को दृश्यमान द्वारा समझा जाना चाहिए और यही ग्रीक मिथक का सिद्धांत है। इन लोगों ने ईश्वर को सुंदर एवं सशक्त चित्रित किया और अपनी इच्छाओं की पूर्ति की। ग्रीक की सभी कला और विचार मनुष्य पर ही केंद्रित थे। ग्रीक मिथक ज़्यादातर देवी देवताओं की कहानियों के ऊपर है जिसे एक ग्रीक बाइबल की तरह पढ़ना है। आधुनिक विचार के अनुसार मिथक का धर्म से कोई संबंध नहीं है ग्रीक मिथक को ग्रीक धर्म से अलग कहना बहुत ही कठिन है।

1.4.2. रोमन मिथक

"The influence of Greek myths was seen everywhere in Rome, in the architecture, subject matter and adjournments of sculptures, temples and Mosaics"

- Roman Mythology, World History Encyclopedia

ग्रीक मिथक और साहित्य का प्रभाव रोम संस्कृति पर बहुत ही गहरा पड़ा की प्राचीन रोमन देवी-देवताओं के रूप बात में ग्रीक देवताओं के सादृश्य में बदल दिया था, किंतु उनके नाम रोमन ही रहे हैं । उदहारण के लिए

रोमन देवता जुपिटर जिसे ग्रीक मिथक में ज़ीउस कहलाते है और रोमन देवी वीनस जिसे ग्रीक मिथक में एफ्रोडाइट कहलाते है ।

ग्रीक और रोमन लोगों के ईश्वर प्रेम, घृणा, ईर्ष्या जैसे मानवीय भावनाओं को दर्शाया है, जिसके कारण रोम और ग्रीक की जनता इन पौराणिक कथा में अपने आप को देखते थे। वे अपने ईश्वर और ईश्वर से उनके संबंध को समझते थे। उनके मिथक उन्हें यह सीख देते हैं कि किसी को अपना भाग्य– ताकत, दृढ़–संकल्प एवं बड़प्पन से मिलता है । इन मिथकों ने एक व्यक्ति को इस निर्देयी दुनिया की कठिनाइयों के खिलाफ खड़े होने के लिए सक्षम बनाया। मानव और देवताओं के बीच निरंतर असहमतियाँ एवं लड़ाइयां होने के बावजूद भी वे राक्षस और दानवों से दुनिया को बचाने के लिए एक साथ खड़े होते थे।

ग्रीक देवताओं को अपनाना एक बहुत ही साधारण बात है क्योंकि रोमन ने स्वयं अपने ईश्वर को मूर्त रूप नहीं दिया, उनमें धार्मिक भावना तो थी लेकिन कल्पना शक्ति का अभाव था। उनके लिए एक दूसरे से अलग और ज्वलंत व्यक्तित्व वाले ईश्वर को बनाना कठिन था। ग्रीक कला और साहित्य का इटली में प्रमुख होने के बाद रोमन को सुंदर एवं काव्यात्मक ईश्वर की आवश्यकता महसूस हुई।

हर रोमन परिवार का अपना एक ईश्वर था जिन्हें लारस और पेरनेट्स कहते हैं । उनका किसी भी मंदिर में पूजा नहीं होती। उनकी पूजा अधिकांश घर में ही की जाती थी और उनको भोजन समर्पित किया जाता था। ऐसा माना जाता है कि उनके अंदर उस परिवार की पूर्वज की आत्मा बसती है । इनके अतिरिक्त फोनस, क्यूरीनस, मेंस, लेमुरस, लार्व, कमेने, लूसीना पोमोना आदि बहुत सारे पौराणिक ईश्वर थे जिन सब के पीछे एक मिथकीय लोककथा भी जुड़ी हुई हैं ।

ग्रीस और रोम के मिथक में दुनिया का निर्माण, अच्छाई और बुराई की प्रकृति, पुनर्जन्म जैसे मुद्दे भी लगभग समान थे– आदि। ग्रीस और रोम के लोगों के लिए उनके मिथक ने कई मायने में सुरक्षा प्रदान की है । इसीलिए उनके मिथक को सरल कहानियों के रूप में आसानी से खारिज करना गलत होगा। ग्रीस की कला, दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति को अपनाने में रोम काफी

सक्षम थे। हालांकि ग्रीक को उन्हें इस प्रकार अपनाना पड़ा कि वह रोम के मूल्यों को भी प्रतिबिंबित करें।

1.4.3 नॉर्स मिथक

नॉर्स मिथक की दुनिया एक ऐसी अजीब दुनिया है जो भ्रामक है । जिस प्रकार भारतीय मिथक में ऐसा माना जाता है कि ईश्वर स्वर्ग में रहता है, नॉर्स मिथक के अनुसार उनके भगवान जहाँ रहता है उस जगह को अस्गार्ड (Asgard) कहा जाता है । वहाँ खुशी, आनंद या वरदान प्राप्ति का विश्वास ही नहीं होता। यह एक श्मशान जैसा है जहाँ के भगवान भय के साथ जीते हैं कि उनका अंत निश्चित है । वे अपने शत्रुओं के साथ युद्ध करके विनाश का सामना करने के भय में जीते हैं। यह जानते हुए भी कि अंत में वे हारने जा रहे हैं, उन्हें दुष्ट शक्तियों के साथ लड़ना है और मर जाना है ।

इसमें मानवता के सच को दर्शाया है। यहाँ ईश्वर बुराई के सामने मजबूर हो जाते हैं । कर्म, साहस या धीरज यहाँ उनके काम नहीं आता। एक बहादुर मौत ही उनका नसीब है। यहाँ मनुष्य भी अपने ईश्वर के साथ खड़े होकर बुराई के खिलाफ लड़ता है और वीर मृत्यु प्राप्त कर लेता है ।

यही नॉर्स मिथक या उनके धर्म में रेखांकित जीवन की अवधारणा है। उनको यही सिखाया जाता है कि एक वीर पुरुष का मूल्य एक वीर मृत्यु से ही साबित हो सकता है किंतु उनको यह चुनने की स्वतंत्रता होती है कि क्या वह एक ऐसी मृत्यु को वरण करना चाहते हैं या नहीं। नॉर्स मिथक के कवि उस वीर मृत्यु में प्राप्त होने वाली जीत को देखता है और उस साहस को जीवित रखने के लिए लोगों को उत्प्रेरित करने वाले काव्य लेखन किए। उनकी सबसे पुरातन पांडुलिपि 'एल्डर एड्डा' (Elder Edda) के कवियों की कल्पना शक्ति उनकी कौशल से भी अधिक असरदार है जिन्हें उन्होंने शब्दों में बदला। इनकी कहानियाँ काफी शानदार है और ग्रीक मिथक से भिन्न है। औरत और मर्द जानबूझकर मृत्यु को गले लगाते हैं। जैसे एडित हैमिल्टन ने अपने ग्रंथ में लिखा है "अंधेरे में एकमात्र प्रकाश वीरता है"।

नॉर्स मिथक के अनुसार ओडिन के दो पुत्र थे थोर एवं लोकी। थोर दुनिया की सबसे बड़ी फिल्म फ्रेंचाइजी 'मार्वल' (Marvel) के सुपर हीरोस में एक के रूप में दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया है । थोर द्वारा मुख्य किरदार

निभाते हुए तीन फिल्में अभी तक प्रदर्शित किया है । थोर (2011), थोर थे डार्क वर्ल्ड (2013) ओर थोर रंग्रोक (2019)। इन तीनों फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस में तकरीबन एक लाख छियालीस हज़ार करोड रुपए कमाए जो इस बात का सबूत है कि थोर एक ऐसी मिथकीय पात्र हैं जो विश्व प्रसिद्ध है, जिन्हे दुनिया भर के लोग प्रेम करते हैं । खलनायक होने के बावजूद भी लोकी नामक पात्र को चाहने वालों की संख्या इतना अधिक है कि फिल्म मेकर्स ने इस पात्र पर एक अलग सा सीरीज़ बनाया जिसे डिजनी प्लस में दिखाया गया था। यह सीरीज़ भी काफी लोकप्रिय हुआ था। पौराणिक नॉर्स मिथक की तुलना में यह फिल्में काफी अंतर रखती है। किंतु थोर और लोकी बेशक इस दुनिया की दो सबसे प्रसिद्ध मिथकीय पात्र हैं ।

1.5 मिथक एवं साहित्य में संबंध

साहित्य मनुष्य को समझने का सबसे सशक्त माध्यम है, क्योंकि साहित्य मनुष्य के जीवन और उनके कर्मों का नकल है । साहित्य के माध्यम से समाज क्या सोचते हैं क्या कहते हैं और क्या करते हैं इसका हमें चित्र मिलता है । साहित्य लेखक जीवन की वास्तविक घटनाओं को कल्पना में बदलकर समाज के समक्ष एक दर्पण के रूप में प्रस्तुत कराता है । जिसे देखकर मनुष्य को अपनी अंतरात्मा में झाँककर उसकी गलतियों को सुधारने का मौका प्राप्त करता है । उदाहरण के लिए प्रेमचंद के उपन्यासों में उन्होंने अपने समय के मज़दूर एवं कृषकों के कष्टदायक जीवन का यथार्थ चित्रण किया है ।

मिथक आदिम मनुष्य के देन है । इनके धार्मिक एवं आध्यात्मिक कल्पना शक्ति को प्ररिणामस्वरूप ही के मिथक का उद्भव हुआ था। मैक्सिम गोर्कि के अनुसार यह रचनाएँ धार्मिक कम बल्कि कलात्मक ज्यादा है । मिथकीय कथाओं में भाग्य और विडंबना आदि का समावेश होता है। इस प्रकार की कहानियाँ पाठकों में बहुत आसानी से हँसी, जिज्ञासा, पछतावा, सहानुभूति जैसी भावनाओं को जगा सकती है । साथ ही साथ साहित्य में मिथक पाठकों के विश्वास को जीतने का काम करता है । मनगढ़त होते हुए भी उसको यथार्थ के रूप में स्वीकार करने के लिए हम प्रेरित हो जाते हैं । इसलिए मिथक और पौराणिक कहानियाँ सभी सभ्यता एवं संस्कृति के लोगों के बीच लोकप्रिय है ।

साहित्य लेखन की शुरुआत मिथक के पुनः सृजन से हुआ था। इन दोनों में कई तत्व समान है । मिथक के प्रचार में साहित्य अहम भूमिका निभाता है क्योंकि मिथक को साहित्य के रूप में प्रस्तुत करने से उसकी पहुँच बहुत अधिक होती है। निर्मला जैन के अनुसार मिथक आदिम मनुष्य का यथार्थ है तथा साहित्य सभ्य मनुष्य का यथार्थ है । मिथक और साहित्य समान नहीं है किंतु मिथक को साहित्य में प्रयोग करने से साहित्यकारों को आदिम विश्वास को एक अलग रूप से पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का मौका मिलता है और उनके विचारों को संप्रेषण करने की समस्या भी नहीं रहती। मनुष्य के अवचेतन मन की भावनाओं को भाषा देकर लेखक एक 'मिथ मेकर' का काम करता है । उदाहरण के लिए मुक्तिबोध की कविताओं को हम ले सकते हैं जिनमें भूत, प्रेत, ब्रह्मराक्षस जैसे मिथकीय बिंबों का प्रयोग उन्होंने अपने लेखन कार्य में किया है। "मिथकों में असंभव के स्थान पर संभव का यथार्थ के स्थान पर अयथार्थ था तथा अविरोधी के स्थान पर विरोधी का चयन शेक्सपियर का पैटर्न रहा है जिसमें अस्तित्व का संकट झाँकता रहता है।"[11] होमर द्वारा लिखित ग्रीक मिथक के दो प्रसिद्द महाकाव्य – इलियट और ओडिसी के कथानकों का पूर्ववर्ती मिथकों के आधार पर निर्माण हुआ है और भारतीय मिथक के महाकाव्य रामायण और महाभारत की मूल कथा के सूत्र भी वैदिक मिथक में प्राप्त होता है ।

मुक्तक काव्य में मिथक का प्रयोग कम हुआ है। एडोनिस, ओड तो दि वेस्ट विंड, ओड टु दि ग्रीशियन अर्न, ओड टु ऑटम, ओड टु दि नाईटिंगल, रामायण, महाभारत, कुमार संभव जैसे काव्य में मिथकीय प्रयोग विपुल रूप में मिलता है। मध्यकालीन कवियों में कभी हमें कबीर, सूर, केशव, मीरा तथा रीतिकाल में बिहारी, पद्ममाकार, देव घनानंद आधुनिक काल के कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, मैथिलीशरण गुप्त, दुष्यंत कुमार, धर्मवीर भारती नरेंद्र कोहली जैसे प्रसिद्ध लेखकों ने भी मिथकीय रचनाएँ की है।

मिथक की सहायता से लेखक अपने युग के सत्यों का उद्घाटन और जटिल मानसिकता को रचना में व्यक्त करते हैं और उन रचनाओं का मूल्यांकन

---

[11] मिथक किसे कहते हैं-अर्थ, परिभाषा अदाहरण सहित जानिए – हिंदी की बिंदी – https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s

करने के लिए समीक्षकों को इन तत्वों को समझना और प्रयोग करना पड़ता है। "यह अवश्य है कि यह प्रवृत्ति बौद्धिक विचार विश्लेषण प्रधान तथा मनोवैज्ञानिक अधिक है इसके अतिरिक्त यह विचारधारा से प्रभावित भी है।"[12]

मिथक से संबंध कुछ समस्याएँ निम्नलिखित है –

- मिथक बहुत पुराना होता है इसलिए इसकी कई सारी वृतांत भी होते हैं ।
- पौराणिक कथाओं के संबंध में चर्चा एवं सिद्धांत सालों से चली आ रही है जिन्हें कई तरीकों से पढ़ा समझा जा सकते है ।
- मिथकीय कथाओं की कई व्याख्याएँ है ।
- मिथक एवं धर्म के बीच एक बारीक रेखा है जो अपरिहार्य है ।
- मिथक के संभावतः नामनीय लेखक नहीं होते, अधिकांश समय हम इस बात से अंजान रहते हैं कि कुछ लोकप्रिय मिथक के मूल लेखक कौन है।
- मिथक के लिए एक उपयुक्त परिभाषा ढूंढना कठिन है ।

"A myth is a story, but it is a special kind of story that, for the purposes of this series has 2 primary characteristics significance & staying power"[13]

अर्थात मिथक एक विशेष प्रकार की कहानी श्रृंखला है जिसकी प्राथमिक तत्व है महता एवं स्थिर सहने की शक्ति।

1.6 हिंदी साहित्य में मिथक का उद्भव

हिंदी साहित्य उद्भव से ही मिथक से जुड़ा है । अगर हम हिंदी साहित्य के विकास क्रम का अध्ययन करेंगे तो हमें यह ज्ञात हो जाएगा कि किसी भी युग के साहित्य में मिथक का अंश विरल नहीं है । आदिकाल में विद्यापति के पदों में शिव और कृष्ण के पौराणिक चरित्र का चित्रण हुआ है । सबरपा, लुइपा डोंबिंपा जैसे लेखकों द्वारा लिखित बौद्ध धर्म से संबंध रखने

[12] मिथक किसे कहते हैं-अर्थ, परिभाषा अदाहरण सहित जानिए - हिंदी की बिंदी - https://www.youtube.com/watch?v=MiWhO8-Agjo&t=134s
[13] What Is Myth? Crash Course World Mythology #1 - Crash Course - https://www.youtube.com/watch?v=HeX6CX5LEj0&t=310s

वाली कथाएँ, श्रावकाचार, भारतेश्वर बाहुबलीरास, नेमिनाथरास जैसे जैन धर्म परंपरा के ग्रंथ है।

पूर्व मध्यकाल के ज्ञानाश्रयी शाखा के कबीर, रैदास, नानकदेव, हरिदास जैसे कवियों के रचनाओं में मिथकीय प्रसंग एवं पात्रों का उल्लेखन देखने को मिलता है और इसी काल के सगुण भक्ति धारा के कवियों की रचनाओं में मिथकीय प्रभाव गहरा है । तुलसीदास द्वारा लिखित प्रसिद्ध कालजयी रचना रामचरितमानस इस काल के देन है । इसके साथ श्रीमद् भागवत के कारण जन्म लिए सगुण कृष्ण भक्ति परंपरा के अंतर्गत सूरदास, कुंबनदास, नंददास रामराय, मीराबाई, रसखान जैसे कृष्ण की आराधना में मग्न कवियों के कृष्ण काव्यों की प्रचुरता थी ।

रीतिकाल तक आते-आते राम और कृष्णा परक भक्ति काव्य में रसिककता का समावेश होने लगा जिसके कारण पौराणिक कथाओं ने एक नया मोड़ लिया। चिंतामणि, मतिराम, भूषण जैसे कवियों की रचना में हम यह देख सकते हैं । इस काल में कृष्ण काव्यधारा से जुड़ी अनेक कवियाँ सामने आए जिनकी रचनाओं में प्रेम, श्रृंगार और विलासिकता का गहरे रूप से प्रयोग हुआ। किशोरीदास गोस्वामी, रामहरि, कृष्णदास, सुख, अनन्य अली जैसे कई कवियों की काव्य, कृष्ण से जुड़ी मिथक पर आधारित है ।

आधुनिक काल की साहित्य में हम जातीयता, धार्मिकता और राष्ट्रीयता देख सकते हैं । भारतेंदु युग के संस्थापक भारतेंदु जी के काव्य में भी मिथकों का प्रयोग हुआ था। इस काल में भक्ति की तीन धाराओं की प्रमुखता थी – निर्गुण – सगुण, वैष्णव तथा देशभक्ति। सगुण भक्ति रचनाओं में राम कृष्ण कथा पर आधारित प्रसंगों पर रचनाएँ सामने आयी। राम विषयक काव्य में हरिनाथ पाठक की श्री ललित रामायण और बाबू तोताराम की राम – रामायण का विशेष स्थान है । इस काल में कृष्ण काव्यों की लेखन राम की तुलना में अधिक था। अलौकिक लीला, कंस वध, प्रेमसंपतिलता जैसे काव्य उल्लेखनीय है।

द्विवेदी युग में इतिवृत्तात्मक प्रवृत्ति की प्रमुखता के कारण मिथकीय पात्रों का सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रण होना आरंभ हुआ, जिससे मिथकीय चेतना का विकास होने लगा। साकेत, पंचवटी, प्रदक्षिणा नामक मैथिलीशरण गुप्त के काव्य रचनाएँ राम कथा पर आधारित थी। अयोध्या सिंह उपाध्याय

'हरिऔध' ने अपने कृष्ण कथा 'प्रियप्रवास' में उनकी युग की प्रासंगसिकता समाहित थी। वही दूसरी तरफ जयशंकर प्रसाद जी ने पुराणों को आधार बनाकर 'कामायनी' की रचना की। भारतीय दर्शन को प्रमुखता देने वाले सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी ने लंका काण्ड की कथावस्तु को लेकर 'राम की शक्तिपूजा' नामक लंबी कविता लिखी। आधुनिक युग के मनुष्यों के आंतरिक दुविधाओं के साथ राम के चरित्र को जोड़कर उन्होंने यह लिखा था।

सुमित्रानंदन पंत की कविता में मिथक का प्रचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है । 'पावस ऋतु में पर्वत प्रदेश', 'सोमपायी' जैसे कृतियाँ इसकी उदाहरण है । रामधारी सिंह दिनकर ने महाभारत के पात्रों को आधार बनाकर वैदिक मिथकों का प्रयोग अपने काव्य रचना में किया। कौरव – पांडव युद्ध की कथावस्तु को द्वितीय विश्व युद्ध के परिप्रेक्ष्य से जोड़कर 'कुरुक्षेत्र' नामक काव्य की रचना की। इसी प्रकार उन्होंने कर्ण को नायक बनाकर 'रश्मिरथी' नामक रचना किया जिसके माध्यम से वर्तमान युग की संवेदनाओं को पाठकों के समक्ष लाया।

छायावादोत्तर साहित्य में पौराणिक कहानियों पर आधारित बृहद साहित्य हमें देखने को मिलता है । केदारनाथ मिश्र 'कैकेयी' नामक काव्य की रचना की जिसमें मुख्य पात्र 'कैकेयी' थी। इसी प्रकार डॉ रामेश्वर शुक्ल अंचल ने ऋषि अगस्त्य के मिथक का प्रयोग अपने काव्य में किया।

धर्मवीर भारती मिथकों के रूप को बदलकर 'अंधा युग' के नामक श्रेष्ठ काव्य की रचना की जिसमें युद्ध के पश्चात समाज के लोगों की स्थिति का चित्रण हुआ है । नरेश मेहता की 'संशय की एक रात' और 'महाप्रस्थान', दुष्यंत कुमार की 'कंठविषपायी', अज्ञेय की 'दिति कन्या' और 'असाध्याय वीणा', मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस', डॉ जगदीश गुप्त की 'शंबूक', जगदीश चंद्र माथुर का 'पहला राजा', सुरेंद्र वर्मा की 'द्रौपदी', आचार्य चतुरसेन की 'वयं रक्षामः', हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की 'पुनर्नवा' जैसे रचनाएँ आधुनिक काल में मिथक की लोकप्रियता को दिखाते हैं । इस प्रकार हम देख सकते हैं कि हिंदी साहित्य में आदिकाल से लेकर साहित्य लेखन कार्यों में मिथक की प्रचुरता हमेशा से थी।

निष्कर्ष

यह अध्याय मिथक एवं पौराणिक कथाओं पर प्रकाश डालता है । इसमें मिथक का अर्थ एवं स्वरूप, मिथक के प्रकार एवं अन्य विधाओं से संबंध,

भारतीय और पाश्चात्य मिथक, वेद, पुराण जैसे विषयों को शामिल किया गया है । आधुनिक दुनिया में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की प्रासंगिकता पर जोर दिया गया है तथा मिथक और साहित्य के बीच संबंध की जाँच करने का प्रयत्न की गई है । व्यक्तित्व निर्माण में मिथकीय कथाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को समझना की आवश्यकता है । भारतीय पौराणिक कथाओं में निहित नैतिक शिक्षाँए भारत में एक प्रबुद्ध पीढ़ी को गढ़ने की क्षमता रखती है ।